इकाई 2 भारत एक उपनिवेश के रूप में*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 औपनिवेशिक काल में भारतीय समाज

2.3 उपनिवेशवाद के दौरान विभिन्न दृष्टिकोणों का उदय

2.3.1 भारत में भारतवादी दृष्टिकोण

2.3.2 औपनिवेशिक दृष्टिकोण

2.3.3 राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

2.4 सारांश

2.5 संदर्भ

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगेः

- उपनिवेशवाद और भारतीय समाज पर इसके प्रभावों की चर्चा करने में;
- खंडित रियासतों से एक एकीकृत राष्ट्र तक भारतीय समाज के उद्‌भव में उपनिवेशवाद की भूमिका की व्याख्या करने में;
- भारत के विचार' की कल्पना जैसा कि भारत विदों उपनिवेशवादियों और राष्ट्रवादियों ने की थी, की वर्णन करने में।

2.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर चर्चा की। भारतीय सभ्यता सब से पुरानी है और भारत की ऐतिहासिक यात्रा में उपनिवेशवाद एक महत्वपूर्ण मोड़ है जिसने भारतीय समाज में पश्चिमी आधुनिकीकरण की शुरुआत की। भारत में समाज और संस्कृति पर विचारों और प्रथाओं की एक समृद्ध परंपराथी जो औपनिवेशिक काल के दौरान पश्चिमी दर्शन संस्कृति और प्रथाओं के प्रभाव में काफी बदल गई थी। इन परिवर्तनों में से एक कृषि से उद्योग में बदलाव है जो उपनिवेश की अवधि के दौरान आया और राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बदलाव आया।

यूरोपीय यात्री लंबे समय से भारत का दौरा कर रहे थे और उन के लेखन में भारतीय समाज का वर्णन किया गया है। जब यूरोपीय लोग भारत आए, तो भारत की अर्थव्यवस्था सबसे धनी थी। यूरोपियों के लिए, एशिया और अफ्रीका की अन्य उपनिवेशों की तुलना में भारत एक अलग स्तर पर था। जैसा कि कोह्न बताता हैः 18 वीं सदी में भारत में स्थायी कृषि व्यवस्था थी, शिल्प उत्पादन की एक बड़ी विविधता थीं; राजशाही की संस्था, आंशिक रूप से लिखित कानूनी प्रणाली, रिकॉर्ड रखने, नियमित मूल्यांकन के आधार पर कराधान, प्रमुख सैन्य बल, राजनीतिक और आर्थिक पेशेः क्लर्कों, कर अधिकारियों, बैंकरों, न्यायाधीशों,

*यह इकाई उज़्मा अज़हर द्वारा लिखित है।

व्यापारियों आदि की तरह, एक जटिल सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था का प्रचलन, था हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बीच पवित्र ग्रंथों और धर्म गुरुओं और धर्म के विद्वानों के एक पदानुक्रम के आधार पर रखा गया था।'(1987: 137))।

निम्नलिखित खंड में हम औपनिवेशिक समय के दौरान भारतीय समाज की प्रकृति पर चर्चा करेंगे। खंड 2.3 में हम इस बात पर एक नजर डालते हैं कि 'भारत' को इंडोलॉजिस्ट, उपनिवेशवादियों और राष्ट्रवादियों ने कैसे माना था।

2.2 उपनिवेशवाद के काल में भारतीय समाज

आइए अब चर्चा करते हैं कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन में भारतीय समाज कैसा था। प्रबुद्धता, वैज्ञानिक और वाणिज्यिक क्रांतियाँ, जो 14वीं और 18वीं शताब्दी के बीच की अवधि में फैली हुई बौद्धिक क्रांति थी, 1789 की फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति ने यूरोप में राजशाही और चर्च की सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था को एक घातक झटका दिया।

माल के बड़े पैमाने पर उत्पादन और कच्चे माल की जरूरत ने दुनिया भर के बाजारों और कॉलोनियों की तलाश में यूरोपीय देशों को पीछे छोड़ दिया। कई समुंद्री यूरोपीय देशों ने उपनिवेश बनाने के लिए धन और क्षेत्रों की तलाश में नौकायन किया। डच,पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेजी ने 17वीं शताब्दी में व्यापारिक पद स्थापित किए। मुगल साम्राज्य के कमजोर होने और कई अस्थिर भारतीय राज्यों ने अंग्रेजों के लिए अपना शासन स्थापित करना आसान बना दिया। यह 1857 के विद्रोह के बाद था, कि ईस्ट इंडिया कंपनी 1858 की अधीनता भंग कर दी गई थी और भारत औपचारिक रूप से सीधे ब्रिटिश शासन में आया था। 19वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्से पर नियंत्रण था। भारत पर ब्रिटिश शासन लगभग दो सौ वर्षों तक चला, जिस में ईस्ट इंडिया कंपनी ने व्यापारियों के रूप में शासन किया था। ब्रिटिश शासन और उपनिवेश भारत में भारतीय समाज में काफी बदलाव लाए। हम कुछ परिवर्तनों के बारे में बताते हैं।

जैसा कि अंग्रेजों ने भारत के धन को छीनकर भारत को लूट लिया और अपने माल के लिए बाजार के रूप में इस्तेमाल किया, अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई और गरीबी बढ़ी। भारतीय हस्त शिल्प उद्योग बर्बाद हो गया क्योंकि वे ब्रिटेन की मशीन से उत्पादित वस्तुओं के से मेल नहीं खा सकते थे।

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था कई बदलावों से गुजरी। औपनिवेशिक आकाओं के लिए नकदी फसलों की पैदावार को प्रारम्भ किया गया और भूमि पर राजस्व का मानकी करण किया गया।
- भारत ने गंभीर अकाल भी देखे, जहां लाखों लोगों ने अपनी जान गंवाई, आधुनिक चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा भी अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई थी।
- अंग्रेजों द्वारा नए दंड संहिता के रूप में आधुनिक नियम कानून लागू किया गया। आपराधिक और सिविल प्रक्रिया के नए कोड, ज्यादातर अंग्रेजी कानून पर आधारित थे। इसका मतलब कानून की नजर में समानता और जाति, क्षेत्र, धर्म या लैंगिकता के आधार पर कोई भेदभाव(सिद्धांत में) नहीं था।
- कानूनी अधिकार क्षेत्र के साथ कई सामाजिक सुधार संभव हो गए, जैसे कि सती का उन्मूलन, विवाह योग्य आयु बढ़ाना,महिलाओं के लिए शिक्षा, आदि। यह कुछ भारतीय जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर और अन्य लोगों के नेतृत्व में किया गया।

- आधुनिक शिक्षा का शुभारंभ लॉर्ड मैकाले द्वारा वकालत की गई नीति के रूप में किया गया था, जिसे पहले 1835 में रखा गया था। शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी (उत्तर भारत में संस्कृत, फारसी जैसी भाषाओं को प्रतिस्थापित) और भारत में आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के लिए कई स्कूल और विश्वविद्यालय खोले गए थे। भारतीयों को मध्यम और निम्न स्तर के रोजगार देते हैं, ज्यादातर भारतीय लिपिक नौकरी करते थे।
- परिवहन और संचार के आधुनिक साधन (टेलीग्राफ नेटवर्क)स्थापित किए गए थे। 1909 में, भारत में रेलवे लाइनें बिछाई गईं। अंग्रेजों द्वारा स्थापित रेलवे नेटवर्क दुनिया के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क में से एक है।
- आधुनिक उद्योगों की शुरुआत की गई, जिससे भारत में एक नए पेशेवर मध्यम वर्ग के पेशों में वृद्धि हुई और जाति व्यवस्था में बदलाव आया।
- औद्योगीकरण से शहरीकरण भी हुआ, पूरे भारत में आधुनिक शहरों का उदय हुआ।
- महात्मा गांधी, बी.जी. तिलक जैसे नेताओं के मार्गदर्शन में अंग्रेजों के शोषणकारी शासन, आधुनिक विचारों और शिक्षा के प्रभाव के कारण राष्ट्रवादी आंदोलन उभरा। तिलक, पंडित नेहरू और कई अन्य लोगों ने भारत को अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया।

बोध प्रश्न 1

1) उपनिवेशवाद क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारतीय समाज पर उपनिवेशवाद के दो प्रभावों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 उपनिवेशवाद के दौरान विभिन्न दृष्टिकोणों का उद्भव

भारतीय संस्कृति और समाज का विश्लेषण और व्याख्या करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रयोग किया गया है। इस खंड में हम कुछ विस्तार से भारतीय समाज के वैचारिक औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी विचारों को देखेंगे।

2.3.1 भारत में भारतवादी दृष्टिकोण

विभिन्न जातीय समूहों और संस्कृतियों के लोगों पर शासन करने की आवश्यकता ने यूरोपीय शासकों में शासितों के जीवन और संस्कृतियों का अध्ययन करने के लिए

तात्कालिक रूचि पैदा की। बर्नार्ड कोहन (1968) का तर्क है कि ब्रिटिश प्राच्यविदों (Orientalists) का भारतीय भाषाओं का अध्ययन नियंत्रण और आदेश की औपनिवेशिक परियोजना के लिए महत्वपूर्ण था। कलकत्ता के फोर्ट विलियम्स में कॉलेज की स्थापना इस विशिष्ट लक्ष्य के साथ की गई कि युवा प्रशासनिक अधिकारियों को संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं और संस्कृति का प्रशिक्षण दिया जा सके।प्लासी युद्ध की अवधि (1757 के बाद) के बाद हम ब्रिटिश प्रशासकों के बीच फारसी संस्कृत और स्थानीय ज्ञान का बढ़ता रुझान पाते हैं जिसने भारत के समाज और संस्कृति का व्यापक विश्लेषण किया। भारत के इतिहास दर्शन और धर्म की गहराई का ज्ञान उन अनुवादों के माध्यम से हुआ जो शुरुआती विद्वानों द्वारा किए जा रहे थे। अलेक्जेंडर डो जिन्होंने सबसे पहले भारत के इतिहास का फारसी में अनुवाद किया और हिंदू धर्म को समझने का प्रयास किया उन्हें भी संस्कृत में लिखे गए हिंदू धर्म के मूलग्रंथों का उल्लेख नहीं करने की सीमाओं का भी एहसास हुआ। दिलचस्प रूप से भारतीय समाज और संस्कृति के बारे में ज्ञान के मुख्य स्रोत के रूप में पाठ को महत्व देने की प्रक्रिया में अनुभाविक वास्तविकता पर कम ध्यान दिया गया था। इस प्रकार भारतीय समाज के एक लिखित या ब्राह्मणवादी संस्करण का निर्माण किया गया जिसने जनता के वास्तविक स्तर पर जीने के तरीके की बहुत उपेक्षा की।

18वीं शताब्दी और उस के बाद के इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण ने अधिक व्यवस्थित वर्णन किया है और कुछ अवधारणाओं, सिद्धांतों और आयाम को प्रदान किया और विद्वानों ने दावा किया है कि यह भारतीय सभ्यता के अध्ययन से लिया गया है। इन विद्वानों का दृष्टिकोण और भारतीय समाज की समझ और उनकी संरचना काफी हद तक शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों और साहित्य के उनके अध्ययन पर आधारित थी।

स्कूल ऑफ इंडोलॉजी ने एक पारंपरिक संस्कृत और उच्च सभ्यता की उपस्थिति की ओर ध्यान आकर्षित किया जो एकता के एक झलक को प्रदर्शित करता है। हालांकि इसकी गलती यह मानने में है कि भारत में एक समरूप आबादी है जिससे सभ्यता के निचले या लोकप्रिय स्तर को स्वीकार करने से इनकार कर दिया जाता है। भारत की इस एकता की जिसके बारे में इंडोलॉजिस्ट ने बात की थी, के वर्णन को जटिल बनाने के लिए स्थानीय क्षेत्रीय और सामाजिक विविधताओं को ध्यान में नहीं रखा था। इसके बजाय उन्होंने बस एकता के दावे को मजबूत किया जो पारंपरिक विचारों और मूल्यों में पाया गया था और इसलिए और गहरा हुआ और इस प्रकार कम परिभाषित था।

एक भौगोलिक इकाई के रूप में और एक सभ्यता के रूप में भारत के बारे में इंडोलॉजिस्ट (भारतविदों) द्वारा में बनाई गई कुछ धारणाएँ निम्नलिखित हैं:

- भारत का गौरवशाली अतीत था और इसे समझने के लिए प्राचीनकाल में लिखी गई पवित्र पुस्तकों से संदर्भ लिया जाना चाहिए। भारत की दार्शनिक और सांस्कृतिक परंपराएँ इन ग्रंथों में निहित हैं।
- इन प्राचीन पुस्तकों से भारतीय संस्कृति और समाज के वास्तविक विचारों का पता चलता है। भारत के भविष्य के विकास को समझने के लिए इन पुस्तकों को समझना चाहिए।
- प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन को प्रोत्साहित करने और संस्कृत और फारसी साहित्य और कविता सिखाने के लिए संस्थानों की स्थापना की जानी चाहिए।
- भारतविदों (Indologists) ने भारतीय सभ्यता के आध्यात्मिक पहलू पर जोर दिया और बड़े पैमाने पर भौतिक संस्कृति के अध्ययन की अनदेखी की। इसलिए वे हिंदू धर्म की अधिक रोमांचक परिभाषा पर पहुंचे जिसके कई निहितार्थ थे। सबसे पहले इसने

ब्राह्मणों की केंद्रीयता और भारतीय समाज में उनकी प्रमुख स्थिति को भी अलग-अलग प्रमाणों के साथ सामने रखा जिसमें कुछ ब्राह्मण राजवंश और राजनीतिक और सैन्य शक्ति अन्य समूहों के हाथों में भी दिखाई दी ।

दूसरे इसने भारतीय समाज के एक सीमित दृष्टिकोण को जन्म दिया जिसमें समय के साथ हुये ऐतिहासिक बदलावों की बात करना तो दूर कोई क्षेत्रीय भिन्नता सम्मिलित ही नहीं की। जिसके परिणामस्वरूप लोगों द्वारा नित्यप्रति जीवन में किए जाने वाले वास्तविक व्यवहार और रीति रिवाजों के बजाय ग्रंथों द्वारा वर्णित और पूर्व निर्धारित व्यवहार की निर्विवाद स्वीकृति दी गई। इसलिए भारतीय समाज को नियमों और सामाजिक व्यवस्था की एक प्रणाली के रूप में समझा जाने लगा जोकि गतिशील न होकर अधिक जड़वत थी।

18वीं शताब्दी में ऐसे कई लोग थे जिन्होंने भारत के इस इंडोलॉजिकल या प्राच्यविद्यावादी दृष्टिकोण का समर्थन किया। तत्पश्चात् भारत संबंधी लेखन पर मैक्स मुलर विलियम जोन्स हेनरी मेन और बाद में हेनरी थॉमस कोलब्रुक अलेक्जेंडर डॉव अलेक्जेंडर कनिंघम का प्रभाव था।

बॉक्स 1: सरविलियम जोन्स(1675-1749)

विलियम जोन्स का जन्म लंदन में हुआ था और 1673 में कलकत्ता आए । उन्होंने 1684 में बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की जो भारतीय संस्कृति और समाज का अध्ययन करने के लिए समर्पित थी। भारत में अपने जीवन के अगले कुछ वर्षों में उन्होंने भारतीय समाज के सभी पहलुओं का अध्ययन करने में खुद को डुबो दिया। यह कहा जा सकता है कि वह भारतीय उपमहाद्वीप के आधुनिक अध्ययन के शुभारंभ के लिए जिम्मेदार है एक ऐसा क्षेत्र जो यूरोपीय शोधकर्त्ताओं में उपेक्षित था। उन्होंने भारत के कानून, संगीत, साहित्य, वनस्पति, विज्ञान और भूगोल पर कई लेख लिखे। और कई ग्रंथों का पहला अंग्रेजी अनुवाद किया जिसमें मनु स्मृति शामिल थी।

(Image credit: By Joshua Reynolds; Originally from sv.wikipedia; Public Domain, https://commons-wikimedia-org/w/index.php?curid=379007)

इंडोलॉजिकल लेखन जिसमें भारतीय दर्शन, कला और संस्कृति प्रतिबिंबित करने वाले भारतीय विद्वान में ए. के. कुमारस्वामी, राधाकमल मुखर्जी, डी.पी.मुकर्जी., जी.एस. घुरिये, लुई ड्यूमॉन्ट प्रमुख हैं। समाजशास्त्र के भीतर भी भारतीय समाजशास्त्र के कई संस्थापक पिता भी इंडोलॉजी से प्रभावित थे जैसे कि बी.एन. सील. एस. वी.केतकर. बी.के. सरकार जी एस. घुरिये और लुइस ड्यूमॉन्ट और अन्य। घुरिये हालांकि डब्ल्यूएच आर के द्वारा एक प्रशिक्षित मानव विज्ञानी थे किंतु समकालीन परिघटनाओं- वेषभूशा, वास्तुकला, लैंगिकता, नगरीकरण, परिवार और रिश्तेदारी भारतीय आदिवासी संस्कृतियों जाति व्यवस्था अनुष्ठान और धर्म में वास्तविक स्वरुप को समझने के लिए शास्त्रीय ग्रंथों की ओर मुखातिब हुए।

उनके सहयोगियों और छात्रों जैसे इरावती कर्वे और के.एम. कपाड़िया ने भी ऐसा किया। घुर्ये की पद्धति को बाद में सर विलियम जोन्स या मैक्स मुलर द्वारा स्थापित ब्रिटिश लेखन के बजाय भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (मुंबई के इंडोलॉजिस्ट के लेखन से प्रभावित स्वदेशी इंडोलॉजी के रूप में संदर्भित किया गया है। ड्यूमॉट के भारतवादी पूर्वाग्रह वर्ण और जाति के बारे में उनके शोध में अधिक स्पष्ट दिखते हैं जहां वे भारतीय सभ्यता की एकता को नहीं मानते हैं। डूमोंट का कार्य होमो हिअरार्किस (*Hierarechicus*) जाति

के चार वर्ण सिद्धांत के सीमित दृष्टिकोण पर आधारित है जो इसे एक सर्व समावेषी श्रेणी के रूप में देखता है और इसलिए भारतीय समाज मूल रूप से पदानुक्रम के सिद्धांत पर आधारित है जहां सभी को उनके जन्म आधार पर स्थान दिया गया है। उन्होंने आगे यह माना कि जाति की संरचना पवित्रता और प्रदूषण के सिद्धांत की विचारधारा और विचारों और मूल्यों के एक निश्चित और एकीकृत विचारधारा का परिणाम है जो बदलती नहीं हैं। लुई ड्यूमॉन्ट ने एक आधुनिक पश्चिमी समाज की कल्पना की जो भारत के विपरीत तर्कसंगतता की आकांक्षा रखता है और भारत में सामूहिकतावादी या समूह समुदाय आधारित पहचान की तुलना में अनिवार्य रूप से व्यक्तिवादी था (ड्यूमॉन्ट 1972)। अतः कई मायनों में उन्होंने यूरोपीय भारतीय विभाजन पश्चिम और पूर्व को एक दूसरे के विपरीत मानते हुए इंडोलॉजिस्ट का अनुसरण किया।

समाजशास्त्री ए.आर. देसाई भारतीय समाज को संस्कृति के नजरिये से देखने वालों की आलोचना करते हैं जोकि अपनी असमानताओं, विविधताओं, बोलीयों और शोषणयुक्त वास्तविक भारत से कोसों दूर हैं मात्र एक पाठवादी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

बोध प्रश्न 2

1) भारतवादी (Indologists) दृष्टिकोण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) भारतवादी (Indologists) की दो बुनियादी धारणाओं का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3.2 भारत का औपनिवेशिक दृष्टिकोण

आइए अब हम भारतीय समाज के औपनिवेशिक दृष्टिकोण को देखें। पारंपरिक भारतीय समाज के अध्ययन में ब्रिटिश औपनिवेशिक रुचि भारतीय समाज के आगे के अध्ययन की नींव रखने में उपयोगी साबित हुई। इन अध्ययनों का जोर इस बात पर था कि भारत को बेहतर तरीके से कैसे संचालित किया जाए। अंग्रेजों के आने के बाद 1760 से भारतीय समाज का ज्ञान बहुत तेजी से विकसित होने लगा। भारतीय प्रशासन में निम्न स्तर की नौकरियों के लिए शिक्षित भारतीयों को बेहतर ढंग से शिक्षित करने के लिए उन्हें भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता थी।

ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के मिशनरियों का दृष्टिकोण था जिसने हिंदू धर्मशास्त्र का पहला संकलन प्रस्तुत किया एन.हल हेड (1776) विलियम जोन्स अन्य विद्वान थे जिन्होंने भारत पर उल्लेखनीय कार्य किया था और प्रशासनिक दृष्टिकोण एच एच रिस्ले ने दिया जिनके

अधीन भारत की पहली जनगणना (1872) हुई, से जे.एच. हटन तक जो अंतिम जनगणना आयुक्त थे जिनके द्वारा एकत्रित जनगणना के आंकड़ों ने बाद के विद्वानों जैसे मॉर्गन मैकलीनन लुब्बॉक टाइलर स्टार के और फ्रेजर की मदद की, में उप विभाजित किया जा सकता है।

क) भारत में धर्म प्रचारक (Missionaries)

भारत में मिशनरीज 19वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय समाज में मिशनरियों द्वारा लिखित क्लॉडियस बुकानन विलियम कैरी विलियम वार्ड और सर जॉन शोर के काफी साहित्य देखे गए जिन्होंने हिंदू धर्म की निंदा की और ईसाई धर्म के प्रसार में आशा देखी। अबे डुबोइस जैसे धर्म प्रचारक (Missionaries) जाति को वर्ण व्यवस्था के रूप में समझते थे जिसे ईसाई धर्म में परिवर्तन के लिए एक बाधा के रूप में देखा गया था। (डर्क 2001)

यह दृष्टिकोण अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में प्रारंभिक इवेंजेलिकल (प्रोटेस्टेंट जो ईसाई धर्म की शिक्षाओं को अनुनय के माध्यम से फैलाने में विश्वास करते थे) के लेखन के माध्यम से विकसित हुआ था। उन्होंने भारतीय समाज को ब्रिटिश समाज की तुलना में अनिवार्य रूप से अयोग्य होने के रूप में देखा और जिसके सुधार का एक मात्र तरीका यह था कि इसे ब्रिटिश तरीकों से और ब्रिटिश शासन द्वारा प्रभावित किया जाए। दिलचस्प बात यह है कि आमतौर पर हिंदू समाज को भ्रष्ट करने के सबूत की तलाश में इन धर्म प्रचारकों (Missionaries) ने भारतीय समाज के अनुभवजन्य अध्ययन में प्रमुख योगदान दिया।

इसके अलावा बाइबिल के अनुवादों की आवश्यकता को भारतीय भाषाओं के सामाजिक-भाषाई अध्ययन के लिए प्रेरित किया गया। बदले में इसने विभिन्न जाति और व्यावसायिक समूहों की जीवंत वास्तविकताओं के अधिक व्यवस्थित और लिखित वर्णन को जन्म दिया। मिशनरियों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में आधुनिक शिक्षा के प्रसार में भी मदद की दूरस्थ क्षेत्रों में काम करने गए जंगलों और अन्य पिछड़े समुदायों में आदिवासियों के बीच और कमजोर और गरीबों के लिए उत्साह और उत्साह के साथ काम किया।

प्राच्यविदों, (Orienalists) धर्म प्रचारकों (Missionaries) ने स्वीकार किया और सहमति व्यक्त की (कोहन 1968) कि धार्मिक विचार और व्यवहार सभी सामाजिक संरचना को स्थापित करते हैं पवित्र ग्रंथों के ज्ञान पर अपने नियंत्रण के माध्यम से ब्राह्मणों की प्रधानता पवित्र परंपराओं के रखवाले के रूप में थी और इसके द्वारा चार वर्णों के ब्राह्मणवादी सिद्धांत को स्वीकार किया गया और चार वर्णों के सदस्यों के विवाह के माध्यम से जातियों के मूल अंतर को देखा गया। जबकि प्राच्यविदों (Orienalists) में एक प्राचीन भारतीय सभ्यता की अत्यधिक प्रशंसा थी और उस आदर्श से भारतीय समाज के पतन से बहुत दुखी थे इसाई धर्म प्रचारकों का विचार था कि कोई भारत का गौरवशाली अतीत नहीं था और यह हमेशा अभावों से भरा रहा है।

ख) प्रशासनिक दृष्टिकोण

प्रशासक जो ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षित और व्यावहारिक वैज्ञानिक तर्कवाद से प्रेरित होकर आये थे उन्होंने भारतीय समाज की जो व्याख्या की वह अधिक यथार्थवादी और जमीन से जुड़ी एवं ऐसे तथ्यों पर आधारित थी जिनके अध्ययन का

उद्देश्य यह समझना था कि भारत के संसाधनों का दोहन के कैसे किया जाय। प्रशासक उन संरचनाओं और संस्थानों को विकसित करना चाहते थे जो उन्हें भारत के मूल स्थानीय लोगों साथ ही साथ भारतीय समाज एवं जीवन की व्यापक जटिलताएं से संबंधित अपने कार्यों नियमों को व्यवस्थित करने में मदद करें।

ब्रिटिश विद्वान और बौद्धिक प्रशासक जिन्हें भारत के विभिन्न हिस्सों में नियुक्ति किया गया, उदाहरण के लिए पूर्वी भारत में रिस्ले डाल्टन और ओमैली उत्तरी भारत में क्रूक आदि, ने भारत की जनजातियों और जातियों पर विस्तृत लेख लिखे जो आज भी संबंधित क्षेत्रों के लोगों की संस्कृति, जीवन के बारे में बुनियादी जानकारी प्रदान करते हैं। इन अध्ययनों का उद्देश्य प्रभावी औपनिवेशिक प्रशासन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारत में जातियों और जनजातियों के बारे में वर्गीकृत विवरणों के बारे में सरकारी अधिकारियों और निजी व्यक्तियों को परिचित करना था। लेकिन ये शुरुआती कार्य ईस्ट इंडिया कंपनी के क्षेत्र में तेजी से वृद्धि के रूप में अपर्याप्त साबित हुए और लेकिन ब्रिटिश भारत की विस्मयकारी विविधता इतिहास राजनीतिक रूपों भूमि की पट्टीदारी की प्रणालियों और धार्मिक प्रथाओं के बारे में जागरूक हो गए। उन्होंने महसूस किया कि समाज शास्त्रीय सूचनाओं की अपेक्षाकृत बेतरतीव्र रिपोर्टिंग को अधिक व्यवस्थित और समर्थित क्षेत्र सर्वेक्षण करना चाहिए जिसका लक्ष्य बेहतर और अधिक सटीक जानकारी की प्राप्ति हो।

लॉर्डमेयो के अनुसार 1872 की पहली जनगणना मुख्य रूप से एक अभ्यास था जहां असंरचित प्रश्न पूछे गए थे और धर्म, जाति और नस्ल की श्रेणियों का उपयोग किया गया था।

बाक्स 2: जाति और जनगणना

अंग्रेजों द्वारा की गई जनगणना की कवायद ने भारत में जाति की व्यवस्था को भी आकार दिया और जोर दिया। निकोलस डर्क्स ने अपनी पुस्तक कास्ट ऑफ द माइंड कॉलोनियलिज्म एंड द मेकिंग ऑफ मॉडर्न इंडिया 2001 में तर्क दिया है किअंग्रेजों के आने से पहले भारतीय समाज को सांप्रदायिक समूहों में बांटा हुआ था और यह पुर्तगाली ही थे जिन्होंने पहली बार जाति को सामाजिक गठन के रूप में सुझाया था। अंग्रेजों ने इन विचारों को आगे ले जाने में मदद की ताकि वे इस व्यवस्था को समझ सकें। डर्क दिखाते हैं कि ब्रिटिश और भारतीयों की सक्रिय भागीदारी से जाति का निर्माण हुआ जिसमें प्रशासक जाति की दावेदारी की सूचना इकट्ठा करने वाले ब्राह्मण व अन्य शामिल थे।

जाति के अलावा भारत का प्रशासनिक विचार ग्राम की श्रेणी पर आधारित था। विकसित और अग्रगामी दृष्टि कोण यह था कि भारत मुख्य रूप से गाँवों से बना था। चार्ल्स मेटकाफ ने भारतीयों को ग्रामीण समुदायों में रहने वाले के रूप में वर्णित किया जो छोटे गणराज्य (स्व-शासित इकाइयाँ) जैसे हैं जिनके पास वे सब कुछ हैं जो वे अपने भीतर चाहते हैं और किसी भी बाहरी संबंधों से लगभग स्वतंत्र हैं (कोहेन 1971 पुनर्मुद्रण 2000: 86)। इसलिए गाँवों को आर्थिक और राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर इकाइयों के रूप में देखा जाने लगा। हालांकि गाँव हमेशा एक बड़ी उप व्यवस्था का हिस्सा थे। शासकों को कर का भुगतान करते थे, सामाजिक रूप से विवाह संबंधों बाजार मेलों और सामाजिक और आर्थिक संबंधों के माध्यम से जुड़े हुए थे क्योंकि किसी एक गाँव में सभी जातियां नहीं थीं, नहीं सभी फसलों का उत्पादन किया गया था (ग्राम भारत पर अधिक विस्तृत चर्चा के लिए यूनिट 4 देखें)। मैक्किम मारिएट ने इसे जाति के क्षैतिज रिश्तों की संज्ञा दी थी और रेडफील्ड ने एक ग्राम समाज को विभाजित समाज, विभाजित संस्कृति के रूप में परिभाषित किया था।

जाति और गाँव के दृष्टिकोण को मिलाकर ब्रिटिश शासकों की इस प्रारूप नीति ने राजस्व कानूनों की मदद की, जमींदारों का वर्ग बनाया और उन्हें व्यावसायिक कृषि करने के लिए भी मजबूर किया।

2.3.3 भारत का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

इंडोलॉजिकल और औपनिवेशिक दृष्टिकोण के बाद आइए अब हम भारत के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को देखें। ब्रिटिशों के भारत आने से पहले भारत विभिन्न छोटे राज्यों रियासतों और राजवंशों में विभाजित था । धर्म, संस्कृति, भाषा और क्षेत्र के संदर्भ में इसकी विविधता के कारण यह व्यापक रूप से माना जाता था कि भारत एक राष्ट्र नहीं बन सकता है क्योंकि इसमें एक सामान्य संस्कृति भाषा या एक सामान्य इतिहास नहीं था बल्कि इसमें बहुत अधिक विविधताएं थीं। जबकि एक राष्ट्र के रूप में उप-महा द्वीपीय पहचान की समानता थी किन्तु राष्ट्र राज्य की जगह नहीं थी। अंग्रेजों से आजादी के बाद ही एक पूर्ण भारतीय राज्य का उदय हुआ। औपनिवेशिक शासन के कई पहलू थे जिसने भारत के राष्ट्रवाद को आकार देने में मदद की। आइए हम इनमें से कुछ पहलुओं और कारकों पर ध्यान दें जिनका राष्ट्र के एक विचार के रूप में उपयोग हुआः

1) अंग्रेज एक विलक्षण प्रशासनिक दायरे में भारतीय समाज के विभिन्न विविध वर्गों को लाये और साथ ही साथ विभिन्न आधुनिक संस्थानों जैसे नौकरशाही पश्चिमी शिक्षा कानून, संचार के साधन, प्रिंटिंग प्रेस आदि की शुरुआत की। इन संस्थाओं और प्रतिष्ठानों ने भारतीय लोगों के साथ-साथ उनके प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के लिए औपनिवेशिक शक्ति की मदद की। इसके साथ ही साथ ये विपरीत इसने भारत के विविध लोगों को संदर्भ के एक ढांचे में भी लाये।

2) अंग्रेजों के अधीन पोषित औपनिवेशिक व्यवस्था ने उपनिवेश विरोधी आंदोलनों को जन्म दिया। इस आंदोलन के नेताओं ने औपनिवेशिक दासता से खुद को मुक्त करने और स्वतंत्र भारत में अपना शासन स्थापित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन ने आंदोलन को तेज किया और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया।

3) आधुनिक भारतीय राष्ट्र के संस्थापकों ने उन विविधताओं को एक करने के लिये जैसे सामान्य भाषा हिंदी, सामान्य ध्वज, राष्ट्रीय गीत-गान आदि को संगठित करने के लिए प्रतीकों का निर्माण किया। इस प्रकार विविधताओं के बावजूद विविध वर्गों के बीच एक सामान्य भावना पैदा की गई जिसे व्यापक रूप से विविधता में एकता के कारकों के के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हालाँकि गांधी, नेहरू, तिलक, पटेल और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने आंदोलन को तेज करने के लिए भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन जैसे अहिंसा, असहयोग, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि में नए आख्यान जोड़े।

4) यूरोपीय राष्ट्रवाद के यूरोपीय मॉडल के विपरीत भारतीय राष्ट्रवाद के संदर्भ में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन ने भी बड़ी भूमिका निभाई। कई विद्वानों का तर्क है कि भारत का स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रीय से अधिक उपनिवेशवाद विरोधी था। संघर्ष ने समाज के सभी वर्गों को अंग्रेजों के खिलाफ एक मंच पर ला दिया।

ए.आर देसाई, डी डी कोसंबी, पार्थ चटर्जी आदि ने भारतीय राष्ट्रवाद को समझाने के लिए नए आयाम प्रस्तुत किए हैं और उन कारकों को देखा जिनसे भारतीय राष्ट्रवाद के निर्माण में मदद मिली।

देसाई 1948 ने औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय समाज के मूलभूत आर्थिक परिवर्तन का विश्लेषण किया है। उन्होंने देखा कि आर्थिक परिवर्तन इस क्षेत्र की विविध आबादी को एकजुट करने के लिए आवश्यक सामग्री में से एक था। साथ ही उन्होंने भारतीय लोगों के एकीकरण की दिशा में योगदान देने और उनके बीच एक राष्ट्रवादी चेतना जगाने में आधुनिक परिवहन, नई शिक्षा, प्रेस और अन्य जैसे अन्य कारकों की भूमिका को भी संबोधित किया।

भारतीय राष्ट्रवाद का विश्लेषण करने के लिए पार्थ चटर्जी 1993 ने औपनिवेशिक बंगाल से उदाहरण लेकर भाषा, संस्कृति, नाटक, स्कूलों, परिवार, महिलाओं आदि का उदाहरण दिया और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका का वर्णन किया। आर्थिक आत्मनिर्भरता, संप्रभुता, न्याय के साथ विकास भारतीय राष्ट्रवाद की मुख्य पहचान का हिस्सा थे। राष्ट्रीय आंदोलन और फिर स्वतंत्र राज्य को चलाने में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण थी। चटर्जी भारतीय राष्ट्रवाद के मामले में तर्क देते हैं कि भारतीय कुलीन लोग आंतरिक क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे जो संस्कृति का हिस्सा था और महिलाएं काफी हद तक इसकी रक्षक थीं। इनका तर्क था कि समाज में यदि किसी सुधार की आवश्यकता है तो यह राष्ट्र द्वारा ही किया जाएगा न कि बाहरी लोगों द्वारा। ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वालों में भी एक राष्ट्र के गठन पर भिन्न विचार रखते हैं। यहाँ राष्ट्र और राष्ट्रवाद की अवधारणा पर कुछ विचारों का नमूना है

बाक्स 3: भारत पर नेहरू के विचार

कभी कभी जैसे ही मैं एक सभा में पहुंचता मेरा स्वागत बड़ी जोर से भारत माता की जयकार से किया जाता। मैं उनसे अप्रत्याषित रूप से पूछूंगा कि उनका चिल्लाने से क्या मतलब था, यह भारत माता कौन है जिसकी वे जीत चाहते हैं? मेरा प्रश्न उन्हें चकित कर देता कि वास्तव में क्या जवाब देना है वे यह नहीं जानते थे इसलिए वे एक दूसरे को देखते और फिर मुझे देखते। मैं अपने सवाल पर डटा रहा। अंत में एक स्फूर्तिवान जाट जो अनादि पीढ़ियों से देश की मिट्टी में रमा हुआ था, बोला कि उनका मतलब है कि भारत माँ की धरती सर्वश्रेष्ठ धरती है जिसकी वो जयकार कर रहे हैं। कौनसी धरती? मैने पूछा, उनके गाँव विशेष की धरती या जिले या प्रांत की धरती या पूरे भारत की धरती?

इस प्रकार प्रश्न और उत्तर तब तक चलते रहते जब तक वे मुझे अधीरता से यह सब बताने के लिए नहीं कहते। मैं उन्हें समझाने का प्रयास करता कि भारत के विषय में जितना वो सोच रहे हैं भारत उसकी सोच से भी बहुत अधिक विशाल है। भारत के पहाड़ और नदियाँ, जंगल और चौड़े खेत जो हमें भोजन देते हैं वे सभी हमें प्रिय हैं लेकिन जो सबसे अधिक महत्व रखते हैं, वे अंततः मेरे और उनके जैसे भारत के लोग हैं। भारत माता की जीत का मतलब इन सब लोगों की जीत। आप इस भारत माता के अंग हैं मैंने उनसे कहा आप सब एक तरह से भारत माता हैं और जैसे ही यह विचार धीरे-धीरे उनके दिमाग में आया, उनकी आँखें चमक उठीं मानो उन्होंने कोई बड़ी खोजकर ली हो।

जवाहरलाल नेहरू डिस्कवरी ऑफ इंडिया पृष्ठ 59

दूसरी ओर एक स्वतंत्रता सेनानी और लेखक वी डी सावरकर ने समग्र भारत के विचार को प्रस्तुत करने की कोशिश में भारत की सभ्यता की वंश क्रम परंपरा, भौगोलिक इकाई, सामान्य पूर्वज और सांस्कृतिक प्रथाओं का अवलोकन किया।

उनका मानना था कि सबसे महत्वपूर्ण कारक जो लोगों के सामंजस्य, शक्ति और लोगों की एकता में योगदान देता है, वह है उनका आंतरिक रूप से एक दूसरे से अच्छी तरह से जुड़ा होना और बाहरी रूप से अच्छी तरह से स्थानीय बस्ती का सीमांकन करना चाहिए और एक नाम जिसके उल्लेख मात्र से वे अपनी मातृ भूमि की संजोयी पोषित छवि के साथ-साथ अपने अतीत की सुहानी स्मृतियों को याद कर सकता है। हम धन्य है कि हमें एक मजबूत और एक जुट राष्ट्र दोनों जरूरी चीजों में मिली हैं। (सावरकर 2009:82)।

उनके पास जो दो आवश्यकताएं हैं जो उनके विचार में हैं वे भौगोलिक पहचान और सामान्य सभ्यता संस्कृति हैं। सावरकर का कहना है कि यह भूमि इस मायने में अलग है कि यह स्वाभाविक रूप से भौगोलिक सीमाओं से परिभाषित होती है। जैसाकि सामान्य सभ्यता के प्रमुख सावरकर ने हिंदू शब्द और इसके व्युत्पन हिंदुत्व शब्द को अपने सांस्कृतिक सार की समझ में लाने की कोशिश की है। हिंदुओं में असमानताओं की तुलना में समानताएं अधिक हैं और एक संस्कृति जो दूसरों से अलग है उनका तर्क है उन्हें सांस्कृतिक इकाई के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। एक हिंदू तब सिंधु से मिलने वाली भूमि के प्रति लगाव महसूस करता है जो उसके पूर्वजों की भूमि के रूप में उसकी जन्मभूमि है और जिसने सभी को समाहित किया गया था और आत्म सात किया गया था उसे आत्मसात कर हिंदू लोगों के रूप में जाना जाने लगा है और जो पूर्वगामी विशेषताओं के परिणाम के रूप में विरासत में मिला है और एक सामान्य इतिहास सामान्य नायक एक सामान्य साहित्य एक सामान्य कला एक सामान्य कानून और एक सामान्य न्यायशास्त्र, सामान्य मेलों और त्यौहारों, संस्कारों, अनुष्ठानों समारोहों और संस्कार के रूप में उनका प्रतिनिधित्व करता है।'' (सावरकर 2009:100)।

रवींद्रनाथ टैगोर देशभक्ति और राष्ट्रवाद के बीच अंतर करते हैं देश भक्ति का अर्थ है किसी के देश के लिए प्रेम, क्षेत्रीयता की भावना, एक व्यक्ति के जन्म के स्थान के लिए एक निश्चित भावनात्मक लगाव, वह स्थान जहाँ आप बड़े हुए हैं वह स्थान जो आपकी शुरुआती यादों का निर्माण करता है। राष्ट्रवाद अलग है। ''राष्ट्रवाद एक विचारधारा है भावना नहीं। यह उस देश के विचार पर आधारित है'' ऐसा आशीष नंदी टैगोर पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं। नंदी आगे कहते हैं कि टैगोर का मानना था कि भारत समुदायों का देश था। यह एक राष्ट्र का देश नहीं था। इसलिए भारत में एक राष्ट्र बनाने की कोशिश स्विट्जरलैंड में एक नौ सेना बनाने की कोशिश की तरह थी।

भारतीय राष्ट्र के गठन के विचार के बारे में यहाँ चर्चा की गई है विभिन्न विवरणों को विवरण में बहुत अधिक जाने और इसके विश्लेषण के बिना दिया गया है। इन अलग-अलग दृष्टिकोणों से आपको संकेत मिलना चाहिए कि राष्ट्र का विचार निर्माण है जहां परंपरा भाषा संस्कृति सभ्यता इतिहास और इसके लोग सभी को परिभाषित करने के लिए आयोजित किया गया है जो एक राष्ट्र का गठन करता है।

बोध प्रश्न 3

1) उपनिवेशवादी दृष्टिकोण का उद्देश्य क्या था और इसने भारत पर शासन करने में अंग्रेजों की मदद कैसे की?

.....

.....

.....

.....

2) भारत का प्रशासनिक दृष्टिकोण क्या था?

.....

.....

.....

.....

.....

3) भारतीय राष्ट्र के निर्माण में मदद करने वाले कारक कौन से थे उल्लेख करो।

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 सारांश

अंग्रेजों द्वारा उपनिवेशवाद या साम्राज्यवादी शासन ने भारतीय समाज को विभिन्न तरीकों से बदल दिया। भारत पर बेहतर नियंत्रण और शासन करने के लिए ब्रिटिश शासकों की रुचि ने भारतीय समाज के अध्ययन को जन्म दिया। इस इकाई में हमने विस्तार से देखा है कि कैसे भारत की कल्पना की गई और भारत के वैज्ञानिकों उपनिवेशवादियों और राष्ट्रवादियों द्वारा देखी गई।

18वीं शताब्दी के बाद के इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण ने एक अधिक व्यवस्थित अध्ययन प्रदान किया और अवधारणाओं सिद्धांतों और ढांचे को प्रदान किया जिसका विद्वानों ने दावा किया था कि वे शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों और साहित्य के अपने अध्ययन के आधार पर भारतीय सभ्यता के अपने अध्ययन से निकले हैं। औपनिवेशिक दृष्टिकोण और अध्ययनों ने ब्रिटिश शासकों की नीति निर्माण राजस्व कानूनों जमींदारों के वर्ग का निर्माण करने में मदद की और व्यावसायिक कृषि को भी मजबूर किया। मिशनरी और प्रशासकों के विचार और अध्ययन भी भारतीय समाज के आगे के अध्ययन की नींव रखने में उपयोगी साबित हुए। राष्ट्रवादी दृष्टिकोण पर अनुभाग में हमने उन प्रमुखकार कों का पता लगाया जो। राष्ट्र के निर्माण में मदद करते थे। ए आर देसाई ने देखा कि आर्थिक परिवर्तन आधुनिक परिवहन नई शिक्षा प्रेस आदि जैसे कारकों के साथ-साथ क्षेत्र की विविध आबादी को एकजुट करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सामग्री में से एक था। वहीं पार्थो चटर्जी के अनुसार भाषा संस्कृति नाटक स्कूलों परिवार महिलाओं आदि ने राष्ट्रनिर्माण में भूमिका निभाई।

2.5 सन्दर्भ

कोहन बर्नार्ड।(1968 पुनर्मुद्रित 2009 द स्टडी ऑफ इंडियन सोसाइटी एंड कल्चर इन कोहन एंड सिंगर एड।

स्ट्रक्चर एंड चेंज इन इंडियन सोसाइटी। रावत प्रकाशन नईदिल्ली।

चटर्जी पार्थो। (1993 राष्ट्र और उसके अंश औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक इतिहास। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूजर्सी।

कोहन बर्नार्ड। (1971 पुनर्मुद्रण 2000। भारत एक सभ्यता का सामाजिक नष विज्ञान।ओ यू पी।

कोहन बर्नार्ड। (1998 पुनर्मुद्रण 1990। इतिहासकारों और अन्य निबंधों के बीच एक मानव विज्ञानी। ओ यू पी नई दिल्ली।

दासगुप्ता बिप्लब। (2003 औपनिवेशिक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पी पी। 31 सामाजिक वैज्ञानिक वॉल्यूम। 31 नंबर मार्च। अप्रैल 2003 पीपी 27-56।

देसाई ए.आर.1948 पुनर्मुद्रण 2000। भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि। लोकप्रिय प्रकाशन नई दिल्ली।

डिर्क निकोलस बी। (2001 कास्ट ऑफ द माइंड कॉलोनियलिज्म एंड द मेकिंग ऑफ कोलोनियल इंडिया। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस न्यूजर्सी।

ड्यूमॉन्ट एल और पोकॉक डी (1957। भारत के एक समाज शास्त्र के लिए भारतीय समाज शास्त्र में योगदान पीपी 7-22

इंडेन रोनाल्ड। 1990 इमेजिनिंग इंडिया। बेसिल ब्लैकवेल लिमिटेड कैम्ब्रिज मास।

नेहरू जे। 2008। भारत की खोज। ओ यू पी नई दिल्ली।

भारत में समाज शास्त्र 2005 बुक एमएसओ 004 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान स्कूल नईदिल्ली सितंबर 2018 को एक्सेस

विद्यार्थी एल। पी। 1976 भारत में मानव विज्ञान का उदय। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली

सावरकर वी-डी- 2009 । हिंदुत्व। हिंदी साहित्य सदन नई दिल्ली।

नंदी आषीश 2018 कल पर 12 अक्टूबर 2018 को पहुँचा

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद के माध्यम से क्षेत्रीय विस्तार का एक रूप है जहां एक औपनिवेशिक देश उपनिवेशी राष्ट्र पर राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण करता है जिससे औपनिवेशिक देश के लिए धन प्राप्त होता है और उपनिवेश के लिए निर्धनता और गरीबी होती है।

2) उपनिवेशवाद के प्रभाव

- अंग्रेजों द्वारा एक नए दंड संहिता के रूप में आधुनिक कानून लागू किया गया। आपराधिक और सिविल प्रक्रिया के नए कोड ज्यादातर अंग्रेजी कानून पर आधारित थे। इसका मतलब कानून की नजर में समानता और जाति क्षेत्र धर्म या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव सिद्धांत में नहीं था।
- राजा राम मोहन राय ईश्वर चंद विद्यासागर और अन्य जैसे भारतीयों के नेतृत्व में सती को समाप्त करने विवाह योग्य आयु बढ़ाने आदि जैसे कानूनी अधिकार क्षेत्रों के साथ कई सामाजिक सुधार संभव हो गए।

बोध प्रश्न 2

1) इंडोलॉजिकल दृष्टिकोण ने एक अधिक व्यवस्थित व अध्ययन दिया और कुछ अवधारणाओं सिद्धांतों और ढांचे को प्रदान किया जिसका विद्वानों ने दावा किया था कि वेशास्त्रीय संस्कृत ग्रंथों और साहित्य के अपने अध्ययन के आधार पर भारतीय सभ्यता के अपने अध्ययन से निकले हैं।

2) भारतविदों की मूलधारणा

- भारत का गौरवशाली अतीत था और इसे समझने के लिए प्राचीनकाल में लिखी गई पवित्र पुस्तकों को वापस जाना चाहिए। भारत की दार्शनिक और सांस्कृतिक परं पराएँ इन ग्रंथों में निहित हैं।
- इन प्राचीन पुस्तकों से भारतीय संस्कृति और समाज के वास्तविक विचारों का पता चलता है। भारत के भविष्य के विकास को समझने के लिए इन पुस्तकों को समझना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

उपनिवेशवादी अध्ययन का जोर इस बात पर था कि भारत को बेहतरतरी के से कैसे संचालित किया जाए। अध्ययन से ब्रिटिश शासकों का नीति निर्माण राजस्व कानूनों जमींदारों के वर्ग का निर्माण करने में मदद मिली और व्यावसायिक कृषि प्रथाओं को भी मजबूर किया गया।

प्रशासकों द्वारा भारतीय समाज की व्याख्या ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षित और व्यावहारिक वैज्ञानिक तर्क वाद द्वारा प्रेरित। उनका उद्देश्य भारत को उसके संसाधनों के दोहन के लिए समझना था। प्रशासकों ने ऐसी श्रेणियां विकसित करने की मांग की जो भारत के मूल निवासियों के जीवन से संबंधित उनके विचारों और कार्यों को क्रमबद्ध करने में उनकी मदद करें जो इसे जटिल बनाने वाली विशाल जटिलताओं से बचते हैं। ऐसे कारक जिन्होंने भारत के राष्ट्रवाद में मदद की अंग्रेजों ने उन विभिन्न खंडों को एक विलक्षण प्रशासनिक दायरे में लाया और साथ ही साथ विभिन्न आधुनिक संस्थानों जैसे नौकरशाही पश्चिमी शिक्षा कानून न्यायालय संचार के साधन प्रिंटिंग प्रेस आदि की शुरुआत की ऐसे प्रतिष्ठान हालांकि जिन्होंने भारतीय समाज में बदलाव लाए लेकिन इसके विपरीत इसने भारतीय लोगों के साथ साथ अन्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए औपनिवेशिक शक्ति की मदद की।

उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन का उदय तत्कालीन नेतृत्व ने भारत को एक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन के बाद इसने आंदोलन को तेज किया और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को एकता लाने के लिए प्रेरित किया।